कृण्वन्तो विश्वमार्यम् यतेमहि स्वराज्ये
website : www.pramanaresearchjournal.com ISSN : 2249-2976
Impact Factor : 4.005

Pramāna
Research Journal

(Art, Literature, Humanity, Social Science, Commerce, Management, Law & Science Subjects)

(Indexed & Listed at :
Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
Copernicus, Poland
Research Bib., Japan
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
UGC Approved List Sl. No. 41241
(Peer Reviewed)

Year : 8
Issue : 32(iii)
Apr-Jun 2019
www.pramanaresearchjournal.com

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

Acharya Academy, Bharat

ISO : 9001-2008

• **आयुर्वेदिक ग्रन्थों में वर्णित हृदय रोग विश्लेषण**
डॉ. मनीष खेमरिया, सिल्की शर्मा **435-439**
• **देवीभागवत में नारी का कन्या रूप**
डॉ प्रमोद पाण्डेय **440-443**
• **शिक्षा में सूचना सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी का प्रभाव**
नरेश कुमार शर्मा **444-447**
• **भवभूति के उत्तररामचरितम् में नाट्यकला**
मनीलता पचानौत **448-452**
• **उपनिषदों में प्राणतत्त्व का स्वरूप**
महेश कुमार मीणा **453-456**
• **'कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते'**
डॉ० कुमारी नन्दिनी **457-461**
• **भवभूति के नाटकों में नारी पात्रों का अस्तित्व**
कोमल **462-465**
• **नेहरू चिन्तन का सहित्य पर प्रभाव**
डॉ० हंसराज चौहान **466-470**
• **आधुनिक संस्कृत काव्यों में अपराधिक कारणों पर चिन्तन**
दिनेश कुमार गुर्जर **471-474**
• **नाटिकाओं की कथावस्तु का नाट्यशास्त्रीय विवेचन**
अनीता शर्मा **475-478**
• **नाटककार भवभूति के रूपकों में नारी विमर्श**
विकास कुमार मीना **479-482**
• **'वाल्मीकि रामायण में वैदिक संस्कृति के आयाम'**
रमेश कुमार **483-485**
• **"वैदिक वाङ्मय : समन्वयात्मक भावभूमि"**
डॉ. अशोक कँवर शेखावत **486-490**
• **महाभारत में वर्णित मदालसा उपाख्यान का विश्लेषण**
मेघा शर्मा **491-496**
• **सिद्धान्तसार्वभौममतखण्डनम्**
मनीष कुमार त्रिपाठी **497-503**
• **अभिराज राजेन्द्र मिश्र की पुनर्नवा कथा में स्त्रीविमर्श**
प्रोफेसर अगम कुलश्रेष्ठ, मोनिका मीना **504-508**
• **Mental health Correlation with Yoga: opportunities and challenges**
Sunder Singh **509-516**
• **अथर्ववेद में 'अतिथि-सत्कार' निरूपण**
मेघा शर्मा **517-521**
• **Physico-Chemical and Microbiological Analysis of Underground Water in Town Deeg (Bharatpur) Rajasthan : India**
Sunder Singh **522-527**
• **नेपालीजी की प्रगतिशीलता**
डॉ० दिवाकर चौधरी **528-532**

Pramāna
International Refereed
UGC List No.41241
Impact Factor : 4.005
Research Journal (ISSN : 2249-2976)
Year-8, Issue-32(iii)(Apr.-Jun. 2019) (Page No. 528-532)

नेपालीजी की प्रगतिशीलता

डॉ॰ दिवाकर चौधरी
नेट-जे.आर.एफ हिन्दी
बी॰आर॰ए॰ बिहार विश्वविद्यालय

शोध-आलेख सार

गोपाल सिंह 'नेपाली' उत्तर-छायावाद के यशस्वी और प्रतिनिधि कवि-गीतकार के रूप में हिन्दी साहित्य-जगत में प्रतिष्ठित हैं। यह काल हिन्दी-साहित्येतिहास का प्रवृत्तिगत वैविध्य का काल है। साथ ही यह भारतीय इतिहास के मुक्ति संघर्ष, नवीन भावबोध और आधुनिक विचारों से साक्षात्कार का काल भी है। नेपाली इस काल के प्रेम, प्रकृति और राष्ट्रीयता प्रधान गीति-काव्यधारा के विशिष्ट हस्ताक्षर हैं। इन्हें इस के कवियों में अति महत्वपूर्ण माना जाता है। उनके लिए कविता अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति मात्र नहीं; अपने समय-सन्दर्भों से जुड़ने का एक रचनात्मक प्रयत्न भी है।

मुख्य-शब्द : उत्तर-छायावाद, गीति-काव्यधारा, प्रगतिशील कविता, स्वच्छन्दतावाद, रहस्यवाद, छायावाद, प्रयोगवाद ।

गोपाल सिंह 'नेपाली' उत्तर-छायावाद के यशस्वी और प्रतिनिधि कवि-गीतकार के रूप में हिन्दी साहित्य-जगत में प्रतिष्ठित हैं। यह काल हिन्दी-साहित्येतिहास का प्रवृत्तिगत वैविध्य का काल है। साथ ही यह भारतीय इतिहास के मुक्ति संघर्ष, नवीन भावबोध और आधुनिक विचारों से साक्षात्कार का काल भी है। नेपाली इस काल के प्रेम, प्रकृति और राष्ट्रीयता प्रधान गीति-काव्यधारा के विशिष्ट हस्ताक्षर हैं। इन्हें इस के कवियों में अति महत्वपूर्ण माना जाता है। उनके लिए कविता अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति मात्र नहीं; अपने समय-सन्दर्भो से जुड़ने का एक रचनात्मक प्रयत्न भी है।

नेपाली प्रगतिशील विचारों के सच्चे जन कवि हैं। उनका काव्य लोक-आस्था और सौन्दर्य का काव्य है। वे नये समाज के निर्माण के लिए निरंतर पहल करने वाले रससिद्ध कवि हैं। वे युवाशक्ति को दिशा देने और उसे रचनात्मक उर्जा के रूप में रूपान्तरित करने वाले कवि हैं। अपने प्रथम काव्य-संग्रह 'उमंग' की कविताओं में ही वे अपनी प्रगतिशील चेतना का साक्ष्य दे देते हैं-

"है जीवन हम, हैं यौवन हम,
है यौवन के उन्माद हमीं
जो हिला डुला दे दुनिया को
उस विप्लव के सिंहनाद हमीं
जिस पर अवलंबित क्रांति प्रबल
वह पत्थर की बुनियाद हमीं
जिसमें है साहस, शक्ति भरी
वह ब्रह्मा की ईजाद हमीं।"[1]

प्रगतिशीलता का संबंध मनुष्य की विकासमूलक प्रवृत्तियों और मानववादी-भाव वृत्तियों के साथ गंभीर रूप से जुड़ा रहता है। केवल बने बनाये विचारों, आदर्शों और दर्शनों का खंडन या मंडन करना प्रगतिशीलता नहीं है। प्रगतिशीलता में निर्माण की अपरिमित शक्ति होती है। जिसमें कला अथवा रूप की प्रमुखता न होकर जीवंत तत्वों की प्रमुखता होती है। वह मूलरूप से स्फूर्तिदायक, वीरत्व-व्यंजक तथा आशा और आस्था का संदेशवाहक होती है। उसमें यथार्थ की अभिव्यक्ति, सुन्दर मानवतावादी संस्कृति की कल्पना एवं उच्च आदर्शों की संपृक्ति होती है। उसमें जीवन की असंगतियों और अंर्तविरोधों को समझकर विकासशील और प्रतिभागी शक्तियों का संघर्ष चित्र प्रस्तुत किया जाता है। इस संदर्भ में आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी ने बड़ी उपयुक्त बातें कही है- ''व्यक्ति और समाज के बीच चलनेवाले सामाजिक आदान-प्रदान को सचेत होकर ग्रहण करना काव्य साहित्य को प्रगतिशील ही नहीं उत्थानमूलक भी बनाने में उपयोगी सिद्ध होगा। किसी बँधी-बँधाई लोक अथवा नपे-तूले आदर्शों के आधार पर साहित्य की प्रगति अथवा उन्नयन नहीं हो सकता। बदलते हुए समाज के साथ प्रगतिशीलता का मार्ग भी बदलेगा''।[2] आचार्य वाजपेयी का उपर्युक्त कथन उस बात को सिद्ध करता है कि प्रगतिशील कविता जीवन की विकासमयी उपलब्धियों को निरंतर समेटती चलती है। वह कविता बदले हुए युग के बदले हुए आदर्श के प्रति हमेशा संवेदनशील होती है। यदि ऐसी बात नहीं रहती तो नेपाली कतई नहीं लिखते कि-

''अब घिस गई समाज की तमाम रीतियाँ
अब घिस गई मनुष्य की अतीत रीतियाँ
है दे रही चुनौतियाँ तुम्हें कुरीतियाँ।
निज राष्ट्र के शरीर के सिगार के लिए,
तुम कल्पना करो, नवीन कल्पना करो।''[3]

नेपालीजी की उपर्युक्त पंक्तियाँ इस बात का प्रमाण है कि प्रगतिशीलता चिरकाल से चली आ रही शाश्वत प्रवृत्ति है, जीवन वृत्ति है, काव्य-प्रवृत्ति नहीं।

नेपालीजी की कविता में अंतरंग और बहिरंग का अपूर्व वैविध्य दीख पड़ता है। उनकी कविता में भावगत और शिल्पगत अनेकरूपता दिखाई देती है। फिर भी उनके जीवन और काव्य में अपने समकालीन कवियों की तरह अंतर्विरोध नहीं है। क्योंकि उनके समकालीन कुछ ऐसे भी कवि हैं जो कविता में उन्ही मूल्यों का विरोध करते रहे हैं जिसका जीवन में आश्रय लेकर अपने को सुरक्षित रखते रहे हैं। नेपाली ने अपनी सुरक्षा खुद की है। जीवन तथा काव्य की विषमता मिटाने के लिए जूझते रहे हैं। सम और विषम परिस्थितियों ने नेपालीजी को अपनी सीमा में आबद्ध नहीं किया। यही कारण है कि नेपालीजी का काव्य किसी भी 'वाद' के चौखटे में आबद्ध नहीं है। उनका समस्त साहित्य वादों की सीमा से परे, मानवीय अनुभूतियों का काव्य है। आरंभ से अंत तक उसमें एक जीवंत, जागरूक तथा संवेदनशील व्यक्तित्व का अबाध प्रसार है। जो न तो शत-प्रतिशत स्वच्छन्दतावाद की प्रथित सीमाओं में बँधता है, न छायावाद की, न रहस्यवाद की, न प्रगतिवाद अथवा प्रयोगवाद की। नेपाली की कविता साहित्यिक अर्थों में सर्वथा प्रगतिशील कविता है। उसमें आधुनिक युग की वृहद्-भाव-धारा पूर्णतः समाहित है।

'पंचमी' संग्रह की पहली कविता 'पंचमी' में साहित्य-देवता का आह्वान कर लोकमंगल की कामना करते लिखते हैं-

''देव अमर तुम महिमा-मंडित
जग में मानव कुण्ठित-दण्डित
उसके कर में एक दीप था
वह भी आज नियति से खंडित

जागो देव, तिमिर पर जग के
आज बहाओ ज्योतिर्धारा।
युग-मानव की मति में बोलो
संघ-संघ की गति में बोलो
कविता जाग रही तुम जागो
जीवन की जागृति में बोलो
फूटो तुम कवि की वाणी से,
तोड़ो तुम पत्थर की कारा।।''[4]

नेपाली अपने पूर्ववर्ती एवं समकालीन कवियों से भिन्न हैं। वे न तो राष्ट्रीय भावना को ऐतिहासिक परिवेश में देखना चाहते हैं और न ऐतिहासिक-राजनैतिक मूल्यों में ही बँधकर रहते हैं। उनका कवि वर्तमान मूल्य को गति देने के लिए अतीत का कंकाल खड़ा करना नहीं चाहता। वह भारत के दैन्य एवं उसके खंडित मूल्यों को भी भाव चित्र देना पसंद नहीं करता। वह न तो कभी भौगोलिक एकता के लिए भारत के अतिरिक्त मूल्यों का नग्न चित्र खड़ा करना चाहता है। बल्कि एक भावुक किशोर की तरह देश की प्रकृति का भावमय चित्र खींचकर हमारी सोयी हुई भावना को बालोचित रूझान देना पसंद करता है। वह किसी राष्ट्रकवि की तरह थके स्वर में नहीं लिखना चाहता कि -'भारत अपने ही घर में हार गया'। वह भारत की असंतुष्टि को जानता है। वह इस बात को भी जानता है कि मात्र नैतिक संतुष्टि से मानव का उत्थान संभव नहीं। क्योंकि संतोष के गीत अपने जमाने के अतिशय क्रांतिकारी कवियों ने भी गाये थे। उन्होंने कहा है कि संतोष शूकर-पुत्र का चिह्न है निश्चय ही असंतोष से सारे विकास संभव है। यदि असंतोष न हो तो भला उन्नति ही कैसे हो सकती है? परिस्थिति में, समाज रचना में, व्यक्ति में विकास कैसे संभव है? उसके अभाव में क्रांति नहीं हो सकती है।

इसलिए पराधीनता एवं शोषण-दमन से सर्वथा मुक्त समता पर आधारित मानवीय जीवन व्यवस्था के चिर-काम्य लक्ष्य की प्राप्ति के लिए विद्रोह का बिगुल फूँकते हुए कवि ने लिखा है -

''ऐसी भी क्या सृष्टि कि जिसमें
जग-जीवन की गलत नींव हो?
ऐसी भी क्या दुनिया, जिसमें
जो पीड़क हो चिरंजीव हो?
बढ़ो, लगा दे आज चिता पर,
आज गुलामी को जलना है।
बढ़ो, गीत विप्लव का गाते
थोड़ी दूर और चलना है।''[5]

आधुनिक युग में जागृति की लहर तो हममें आयी, किन्तु हम अपनी दारूण स्थिति पर रूदन ही करते रहे। सत्ताधारियों के शोषण के विरूद्ध बुलन्द आवाज उठाने का साहस हम नहीं कर सके। पुनरूत्थान के नाम पर हमने भले ही भरपूर लोकप्रियता प्राप्त कर ली, किन्तु हमारे राष्ट्रकवि की वैष्णवी वाणी यही कामना करती रही कि-

''यही होता है जगदा धार
छोटा -सा घर आंगन होता,
छोटा-सा परिवार''[6]

जब छोटे से परिवार की ही हमारी कामना है तो हमारा देश यदि दो खंडों में विभक्त हो गया तो क्या आश्चर्य? नेपाली का कवि हमारे इतिहास की इन दुष्प्रवृत्तियों से काफी क्षुब्ध है-

"हम धरती क्या आकाश बदलने वाले हैं ।
हम तो कवि हैं इतिहास बदलने वाले हैं"[7]

नेपाली की निष्ठा और संकल्प इस बात का प्रमाण है कि वे आधुनिक इतिहास को नई दृष्टि देना चाहते हैं। उनकी कविता में इसलिए अपनी दुर्गति के लिए रूदन का कोई स्थान नहीं है। नेपाली ने स्पष्ट कहा है-

"जंजीर टूटती कभी न अश्रु धार से,
दु:ख-दर्द दूर भागते नहीं दुलार से।"[8]

यहाँ हम कह सकते हैं कि नेपाली का प्रेम-दर्शन आध्यात्मिक न होते हुए भी शुद्ध सात्विक भाव लिए हुए है। नेपाली शारीरिक सौन्दर्य-चेतना के अतिरिक्त प्रेम की एक लीला- भूमि वहाँ भी मानते हैं। जहाँ शरीरोत्तर मूल्यों को महत्व दिया जाता है। किन्तु अधिकांश स्थलों पर वे मांसल प्रेम को ही अपनाकर चलते हैं। नेपाली की प्रगतिशीलता उनकी आदर्शवादी कल्पना में नहीं अपितु यथार्थ स्थिति की स्वीकृति में निहित है। उनका यथार्थ-बोध और प्रेम भी सात्विकता लिये हुए है।

यह नेपाली की अपनी खोज है जो भारत के दीन-हीन अकिंचन और फटेहाल रहने वाली जनता की कसक, उसकी वेदना एवं टीस को सही रूप में प्रस्तुत करती है। नेपाली की काव्यानुभूति भारतीय जनता के अनुभव को शत-प्रतिशत अभिव्यक्त करती है और जन सामान्य को आलोक देती है। इस चिंतन के पीछे उनके ईमानदार और निष्ठावान कवि की सच्ची जीवनानुभूति एवं आत्मसाक्षात्कार का बल है। नेपाली का उद्देश्य सिर्फ सत्ताधारियों की निंदा करना नहीं है अपितु देश को एक सृजनात्मक मार्ग की ओर गतिशील होने की प्रेरणा देना है। आर्थिक वैषम्य दूर करने के लिए उन्होंने जनता में जागृति का मंत्र फूंका। समतावादी समाज को साकार करने के लिए लोगों को उत्साहित किया। उन्होंने कभी भी पसंद नहीं किया कि देश-विदेश से भीख माँग कर हम जनता को राहत दे। इससे जनता का संस्कार च्यूत होता है और उसमें हीनता और गुलामी की प्रवृत्ति जगने लगती है।

नेपाली की प्रगतिशीलता सामाजिक समानता के लिए नयी राह देती है। वह रास्ता है एकता का, कर्म का, एक दृष्टि का और सद्भाव एवं प्रेम अपनाकर प्रगतिशील होने का-

"है देश एक लक्ष्य एक
कर्म एक है
चालीस कोटि है शरीर
मर्म एक है
पूजा करो पढ़ो नमाज
धर्म एक है
बदनाम हो अगर स्वराज
शर्म एक है
चाहो कि एकता बनी रहे
जनम-जनम
तुम भेद ना करो मनुष्य
भेद ना करो।"[9]

समसामयिकता और निरंतर विकासशीलता उनकी काव्य-साधना का प्रतिफल है। एक ओर उनमें भावात्मक ओजस्वीता है तो, दूसरी ओर उर्जस्वित काव्यानुभूति। उनमें राष्ट्रीयता, तेजस्विता, संघर्षशीलता और जीवन के प्रति अटूट आस्था है। एक स्थल पर वे लिखते हैं कि-

"जन्म ज्योति युग, प्रेम जवानी
लगते सदा नवीन
मृत्यु तिमिर जग विरह बुढ़ापा
लगते हैं प्राचीन
हँसता एक दूसरा दृग में
अश्रु लिए श्री हीन
और बाल रवि ज्योति उड़ा ले
चला अश्रु भी छीन।"[10]

इस प्रकार नेपाली का काव्य अपनी प्रगतिशील दृष्टि के कारण भी महत्वपूर्ण है। नेपाली की प्रगतिशील चेतना किसी वाद की परिणति नहीं है, वह कवि की सामाजिक मंगलाकांक्षा और मानवीय मूल्यों के प्रति गहरी आस्था की देन है। नेपाली परम्परावादी नहीं हैं किन्तु, परम्परा के सनातन मूल्यों की प्रासंगिकता पर वे विमर्श करते हैं और नये समतामूलक समाज के निर्माण की रचनात्मक पहल भी।

संदर्भ

1. हम, उमंग, पृष्ठ–82.
2. स्वाधीन कलम नेपाली, पृष्ठ–23.
3. नवीन, नवीन, पृष्ठ–11.
4. पंचमी, पंचमी, पृष्ठ–22.
5. देख रहे हैं महल तमाशा, नीलिमा, पृष्ठ–71.
6. स्वाधीन कलम नेपाली, पृष्ठ–29.
7. इतिहास बदलने वाले हैं, हिमालय ने पुकारा, पृष्ठ–76.
8. नवीन, नवीन, पृष्ठ–11.
9. नवीन कल्पना करो, हिमालय ने पुकारा, पृष्ठ–41.
10. स्वाधीन कलम नेपाली, पृष्ठ–25.